मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

5 अगस्त 2025
मूल्य 10.00 रुपए

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

अखंड भारत

केवल सपना नहीं, श्रद्धा है, निष्ठा है...

उन आँखों की जिन्होंने
भारत को भूमि से बढ़कर
अपनी माता के रूप में देखा हो,
जो स्वयं को इसका पुत्र मानता हो।

वह पुत्र अखण्ड भारत के लक्ष्य प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयासरत है।

SHAKTI®
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

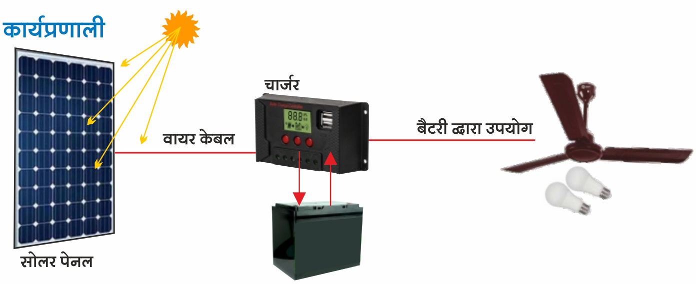

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : ०५ अंक : ०३
•••
श्रावण शुक्ल ११
युगाब्द ५१२७

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
राकेश दाँगी
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
राजेश सोनी
अशोक वर्मा
योगेश भोपे
सौरभ मारु
अमन व्यास
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारतवर्ष केवल जमीन का टुकड़ा नहीं, यह साक्षात भारत माता है, और हमने सदैव माता के रूप में इसकी पूजा की है। यह हमारी वात्सल्यमयी मातृभूमि है। भारत की भूमि धर्मभूमि, कर्मभूमि, पुण्यभूमि और ज्ञानभूमि होने के साथ ही साथ अत्यन्त पवित्र भूमि है। अखंड भारत माता का गौरवशाली इतिहास रहा है। पूरे भारतवर्ष में अनेकता के साथ एकता रही है। हमारे अनेक श्रद्धा के केन्द्र और तीर्थस्थल आज भी पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि में स्थित हैं। इसी के साथ चीन ने भी हमारे धर्मस्थलों पर अधिकार जमा रखा है। भारत का विभाजन राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक भौगोलिक और भावनात्मक किसी भी दृष्टि से सही नहीं है। सन् 1947 में देश को स्वतन्त्रता तो मिली परन्तु यह स्वतन्त्रता नहीं केवल सत्ता का हस्तान्तरण था। पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर हमें खंडित भारत मिला। भारत का विभाजन इतिहास की एक बहुत बड़ी त्रासदी है। आजादी के आन्दोलन का नेतृत्व करने वालों के द्वारा भारतमाता के साथ किया गया विश्वासघात था। क्या यह विभाजन टाला जा सकता था? क्या यह विभाजन स्थायी है? इस विभाजन के जिमेदार कौन हैं? ये प्रश्न आज भी हमारे मन में उठते रहते हैं।

विभाजन का मूल कारण तुष्टीकरण और हमारे नेतृत्वकर्ताओं के मन में राष्ट्र और संस्कृति के बारे में भ्रामक धारणाएं थीं। अंग्रेजों ने यह भ्रम फैलाया कि भारत कभी एक राष्ट्र रहा ही नहीं, उन्होंने ही इसे एक राष्ट्र बनाया है। दुर्भाग्य से हमारे उस समय के नेताओं ने इसे सत्य भी मान लिया। इसी सोच के आधार पर लॉर्ड माउण्टबेटन, जवाहरलाल नेहरू, मोहेमद अली जिन्ना आदि ने नासमझी में करोड़ों-करोड़ों भारतवासियों के भाग्य का निर्णय कर लिया। आइये हम सब संकल्प लें कि भारत माता को पुनः अखंड करेंगे।

भारत पुनः अखंड बनेगा।
सोने की चिड़िया चहकेगी।
जग सिरमौर बनेगी माता।
सारी दुनिया देखेगी।।

इसी विश्वास के साथ
भारत माता की जय।

- देवकृष्ण व्यास

भारत विभाजन की भयानक गाथा

डॉ. सुब्रतो गुहा

14 अगस्त 1947 भारत विभाजन का खौफनाक दिन जब भारत माता की दो भुजाएँ पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के रूप में कटकर अलग हो गई। अपनी भुजाएँ कटने से जो पीड़ा भारत माता को हुई, उस पीड़ा की अनुभूति भारत माता की प्रत्येक भारतवंशी संतान को हुई और तब तक पीड़ा रहेगी जब तक भारत माता की दोनों भुजाएँ पुनः जुड़कर हमारी माता पुनः अखण्ड रूप में दर्शन नहीं देती। सल्तनतकाल और मुगलकाल के मुस्लिम आक्रांता शासकों ने जितने भयानक अत्याचार हिन्दू नर-नारियों पर किए थे, उससे कहीं अधिक अत्याचार 14 अगस्त 1947 के बाद पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान में हिन्दुओं पर हुए। नारा-ए-तकबीर अल्लाह हो अकबर के गगनभेदी नारे के साथ पाकिस्तानी मुस्लिम लीग की दंगा वाहिनी अंसार और रजाकार के दरिन्दे हिन्दू नर-नारी-शिशुओं पर हमला करते एवं गला काटकर, गोली मारकर, अथवा पत्थर बरसाकर निर्मम हत्या करते, महिलाओं से दुराचार करते, उनके घरों, दुकानों, सम्पत्तियों में लूट-पाट करते हुए आग लगाते, खेत-खलिहानों को उजाड़ देते। भारत आने वाली पाकिस्तानी ट्रेनों में हिन्दू-सिखों की लाशें भरकर भेजते तथा उन रेल डिब्बों में बाहर लगे बैनर पर लिखा रहता **नेहरू के लिए भेंट** अर्थात् भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के लिए उपहार में हिन्दू-सिखों के शरीर के कटे अंग और आँखें निकाली हुई लाशें भारत को भेंट। पश्चिमी एवं पूर्वी पाकिस्तान के शहरों, गाँवों, कस्बों की सड़कों पर खून बहता रहा और नालियों में पानी की जगह खून बहता देखा गया। इसका वर्णन हमें तत्कालीन समाचार पत्रों में मिलता है। इसी के साथ यह भी एक तथ्य उस काल के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ कि पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान में तीस लाख से अधिक हिन्दू-सिखों की निर्मम हत्या हुई, पांच लाख महिलाओं से दुराचार हुआ और दो करोड़ से अधिक अपना घर-बार धन-सम्पत्ति गँवाकर भारत में शरणार्थी बनने को मजबूर हुए। दुर्भाग्य का विषय है कि उस समय प्रधानमंत्री नेहरूजी की सरकार ने इन करोड़ों हिन्दू-सिख शरणार्थियों को पुनः बसाने में कोई विशेष सहायता नहीं की जिन भवनों के अहाते में वे आश्रय लिए हुए थे उन्हें वहाँ से खदेड़कर निकाल दिया गया जबकि बाहर अगस्त माह की मूसलाधार वर्षा हो रही थी कितने ही शिशु व नर-नारी इस प्रसंग में मर गए। शरणार्थियों के रोजगार या आजीविका की कोई व्यवस्था नहीं होने से वे ठेला चलाकर, फेरीवाला बनकर अथवा घरों में नौकर-नौकरानी बनकर जैसे-तैसे जीविका चलाने हेतु मजबूर हुए। करोड़ों हिन्दू पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान में अरबों रूपए की सम्पत्ति छोड़कर शरणार्थी बनकर भारत आए परन्तु उस समय की सरकार को इनकी चिन्ता नहीं थी बल्कि चिन्ता उन कुछ हजार मुस्लिमों की थी जो अपना राजनीतिक भविष्य बनाने भारत से पाकिस्तान गए। एक बड़े सेकुलर नेता ने तो दिल्ली में इन पाकिस्तान गए मुस्लिमों की आर्थिक सहायता देने हेतु दिल्ली में अनशन भी किया। आखिरकार नेहरूजी की सरकार ने सन् 1948 में तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री लियाकत अली खान को भारतीय खजाने से पचपन करोड़ रूपए दिए जो पाकिस्तान गए उन कुछ हजार मुस्लिमों का जीवन सुखद बना सके। सन् 1948 में सोने का भाव था केवल नब्बे रूपए प्रति तोला जबकि आज भाव है लगभग एक लाख रूपए प्रति तोला- अर्थात् आज रूपए के मूल्य अनुसार नेहरू जी की सरकार ने पाँच लाख करोड़ रूपए 1948 में पाकिस्तान के शासकों को दिया और भारत आए करोड़ों गरीब हिन्दू-सिख शरणार्थियों को उनके हाल पर छोड़ दिया क्योंकि यही सेकुलरवाद है।

निर्मम हत्याओं, अत्याचार, दुराचार, पलायन और बलपूर्वक धर्मान्तरण के कारण पाकिस्तन में 14 अगस्त 1947 की 28 प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या अब पश्चिमी पाकिस्तान में अब केवल दो प्रतिशत एवं पूर्वी पाकिस्तान अर्थात् बांग्लादेश में केवल पांच प्रतिशत रह गई है। 1947 में जिहादी तत्व नारे लगाते थे **हँस के लिया है पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान** और आज पुनः जिहादी तत्व 2047 तक भारत को इस्लामी राष्ट्र बनाने का षड्यंत्र पूरा करने हेतु विभिन्न प्रकार के तरीके अपना रहे हैं, और भारत के सेकुलर राजनीतिक दल तुष्टीकरण नीति के अन्तर्गत उनकी सहायता कर रहे हैं। यदि उनका षड्यंत्र सफल हुआ और हिन्दू समाज एकजुट होकर मुकाबला करने में सक्षम नहीं हुआ तब जो दुर्दशा पाकिस्तान और बांग्लादेश में हिन्दुओं की है वही दुर्दशा भारत में भी होगी, परन्तु इस बार शरणार्थी बनकर जाने हेतु हमें कोई देश नहीं मिलेगा। इसलिए जागो और हिन्दू समाज को एकजुट होने हेतु जगाओ, क्योंकि **देश की चिन्ता कर नादान, तूफान आने वाला है, तुम्हारी बर्बादी के चर्चे हवाओ में हैं, न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दुस्तान वालो, तुम्हारी निशानी भी न रहेगी इतिहास में।**

सावन माह: शिव भक्ति, प्रकृति और पारिवारिक जीवन का समन्वय

अमित राव पवार, देवास

हिंदू धर्म में हर माह का अपना एक विशेष महत्व और अर्थ है। प्रत्येक हिंदू माह में कोई-न-कोई महत्वपूर्ण पर्व, व्रत, उत्सव, या त्यौहार समाहित होता है। हिंदू नववर्ष चैत्र मास से प्रारंभ होकर फाल्गुन मास पर समाप्त होता है – अर्थात् नवरात्रि से लेकर महाशिवरात्रि तक। यह देखकर प्रतीत होता है कि वर्ष का आरंभ आद्यशक्ति (माँ दुर्गा) से और समापन आदिदेव (भगवान शिव) पर होता है। यह चक्र युगों-युगों से चला आ रहा है और यही सनातन धर्म की विशेषता है। यह सम्पूर्ण संसार स्त्री और पुरुष दोनों के सामंजस्य से संचालित होता है, और यह सत्य हिंदू पंचांग के क्रम में भी परिलक्षित होता है। प्रकृति सदियों से ऋतु परिवर्तन के माध्यम से मनुष्य को संकेत देती है कि वह उससे तालमेल बिठाकर कैसे स्वस्थ, मस्त और संतुलित जीवन जी सकता है।

शिव-शक्ति का दांपत्य संदेश - शिव और शक्ति के स्वरूप में यह संदेश भी समाहित है कि पारिवारिक जीवन, विशेषकर दांपत्य जीवन, स्त्री और पुरुष दोनों के सहयोग से ही संभव और सफल होता है। आज के दौर में जब पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में **लिव-इन रिलेशनशिप** जैसे विचार भारतीय समाज में भी प्रवेश कर रहे हैं, यह चिंतन आवश्यक हो जाता है कि सनातन धर्म ऐसे संबंधों को समर्थन नहीं देता। परिवार और सामाजिक जीवन की स्थिरता हेतु गृहस्थ आश्रम का आदर्श ही उपयुक्त है।

सावन - शिव की आराधना का विशेष काल - कालगणना के अनुसार सावन हिन्दू पंचांग का पाँचवाँ महीना है और यह भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। इस माह से शिव-पार्वती सहित सम्पूर्ण शिव-परिवार की उपस्थिति का क्रम शुरू होता है – सावन में शिव पूजन, फिर श्रीगणेश चतुर्थी, नवरात्रि में माँ दुर्गा का आगमन और कार्तिक मास की पूर्णिमा तक चातुर्मास का समापन होता है। तत्पश्चात् श्रीहरि विष्णु योगनिद्रा से जागकर पुनः सृष्टि संचालन करते हैं।

कांवड़ यात्रा-जीवन यात्रा का प्रतीक - सावन माह की कांवड़ यात्रा मनुष्य के जीवन का गूढ़ संदेश लिए होती है। यह यात्रा उद्देश्य, अनुशासन, समर्पण, सात्विकता, आत्मविश्वास, धैर्य और वैराग्य जैसे गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा देती है। कांवड़िया (कांवड़ लेकर चलने वाला) शिवयोगी के समान आचरण करता है – मन, वाणी और कर्म से किसी का अहित नहीं करता।

कांवड़ में दो जल-पात्र होते हैं – ब्रह्मघट और विष्णुघट – जो बांस की डंडी से जुड़े रहते हैं, और उसका स्वरूप शिव के रुद्र रूप का प्रतीक होता है। इन तीनों (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) का पूजन करके कांवड़ यात्रा आरंभ होती है, जो **शिवो भूत्वा शिवं यजेत्** (शिव बनकर शिव की पूजा करो) को चरितार्थ करती है।

कांवड़ यात्रा- स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता और प्रकृति का पर्व- यह यात्रा वर्षा ऋतु में होती है, जब हरियाली, नमी और शीतलता शरीर और मन को ताजगी प्रदान करती है। नंगे पांव चलने से रक्त संचार बढ़ता है और कई रोगों से मुक्ति मिलती है। यही नहीं, यह यात्रा सामाजिक समरसता का परिचायक भी है – इसमें सभी वर्ग, जाति, आयु और स्थिति के लोग समान रूप से भाग लेते हैं। यह परंपरा केवल धार्मिक ही नहीं, एक सामाजिक पुनर्जागरण भी है – इसमें कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। सभी हर-हर महादेव और बम-बम भोले के जयघोष में एकाकार होकर शिव की भक्ति में लीन होते हैं।

सावन और शिव- प्रकृति के संतुलनकर्ता- शिव केवल संहार के देवता नहीं हैं, बल्कि प्रकृति संतुलन के अधिपति भी हैं। श्रीशिवपुराण में उनके माहात्य का गहन वर्णन है। सावन में जब वर्षा, हरियाली और जलवायु में परिवर्तन आता है, तब शिव का पूजन और भी प्रभावी हो जाता है। सावन शिवरात्रि विशेष पुण्यदायी मानी जाती है।

शिव को जानना सहज नहीं है – वे आदिदेव, आदियोगी, त्र्यम्बक, महाकाल हैं। उनके लिए कहा गया है -

आकाशे तारकेलिंगं, पाताले हाटकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालं, त्रयलिंगं नमोऽस्तुते।।

(आकाश में तारकेश्वर, पाताल में हाटकेश्वर और मृत्युलोक में महाकालेश्वर – तीनों लोकों में व्याप्त त्रिलिंग स्वरूप को नमन है।)

शिव का पूजन सावन में प्रकृति के साथ एकात्मता का अनुपम अवसर है। सावन का महीना न केवल प्रकृति के लिए, बल्कि मानव जीवन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह महीना हमें प्रकृति के महत्व को समझने और उसके संरक्षण के लिए प्रेरित करता है।

84 महादेव मंदिर, उज्जैन: एक धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत

स्वरनिका भाटी

भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म में शिव का सबसे अधिक महत्व है। शिव के सबसे पवित्र स्थल को ज्योतिर्लिंग कहा जाता है। संपूर्ण भारतवर्ष में बारह ज्योतिर्लिंग हैं, जिनमें से एक उज्जैन में है, जिसे हम महाकालेश्वर के नाम से जानते हैं। महाकालेश्वर को पृथ्वी का केंद्र भी माना जाता है। प्राचीनकाल में यह उज्जैन नगर अवन्तिका, उज्जयिनी, प्रतिकल्पा, विशाला आदि नामों से विख्यात था। उज्जैन को मंदिरों का शहर भी कहा जाता है। इन मंदिरों में 84 ऐसे मंदिर हैं जहाँ शिव अपने अलग-अलग नामों से विराजमान हैं जिन्हें हम चौरासी महादेव के नाम से जानते हैं। उज्जैन स्थित 84 महादेव मंदिर न केवल इस प्राचीन शहर के सबसे प्रसिद्ध, बल्कि अत्यंत पवित्र और श्रद्धेय धार्मिक स्थलों में गिने जाते हैं। इन मंदिरों का निर्माण विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में हुआ था, जब अनेक राजवंशों और भक्तराजाओं ने भगवान शिव की आराधना हेतु इन दिव्य स्थलों की स्थापना करवाई। प्रत्येक मंदिर भगवान शिव के किसी विशेष रूप को समर्पित है – कोई रुद्र रूप में पूजा जाता है, तो कोई शांत व सौम्य रूप में। ये मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि उज्जैन की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पहचान का अभिन्न हिस्सा भी हैं। श्रद्धालु यहाँ आकर शिव के विविध स्वरूपों की पूजा-अर्चना करते हैं और आत्मिक शांति, मोक्ष तथा जीवन में सकारात्मक ऊर्जा की कामना करते हैं। इन मंदिरों में भगवान शिव की पूजा और आराधना करने से भक्तों को आध्यात्मिक शांति और मुक्ति की प्राप्ति होती है। ये मंदिर उज्जैन के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

उज्जैन के 84 महादेव मंदिर केवल आध्यात्मिक उपासना स्थलों तक सीमित नहीं हैं; वे इस पावन नगर की प्राचीन और जीवंत सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा हैं। ये मंदिर उज्जैन के इतिहास, लोकजीवन और सांस्कृतिक चेतना को सदियों से संजोए हुए हैं। विभिन्न युगों में निर्मित इन मंदिरों ने न केवल धार्मिक गतिविधियों को पोषित किया है, बल्कि स्थानीय कला, शिल्प, वास्तुकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को भी गहराई से प्रभावित किया है। इन मंदिरों की दीवारों और शिल्पकला में प्राचीन शिल्पियों की कला-कुशलता, तत्कालीन समाज की धार्मिक मान्यताएँ और

सांस्कृतिक सोच स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। मंदिरों के गलियारों में उकेरे गए भित्तिचित्र, मूर्तियाँ और नक्काशी भारत की धार्मिक-सांस्कृतिक समृद्धि की कहानियाँ कहते हैं। इतना ही नहीं, इन मंदिरों के प्रांगण सदियों से संगीत, नृत्य, कथा-वाचन, कीर्तन और नाट्य प्रस्तुतियों के आयोजन स्थलों के रूप में भी प्रसिद्ध रहे हैं। शिवरात्रि, सावन, कार्तिक मास और अन्य प्रमुख पर्वों के अवसर पर इन मंदिरों में आयोजित होने वाले उत्सवों और सांस्कृतिक आयोजनों ने उज्जैन को एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

84 महादेव मंदिरों की उपस्थिति ने उज्जैन को एक ऐसा स्वरूप दिया है, जहाँ धर्म और संस्कृति का अद्भुत संगम होता है। यहां हर मंदिर न केवल एक देवालय है, बल्कि वह संस्कृति का एक मंच भी है, जहाँ परंपरा, आस्था और रचनात्मकता का एक सुंदर मिलन होता है। इस प्रकार 84 महादेव मंदिर उज्जैन की पहचान का वह आधार हैं, जिनके माध्यम से यह शहर आज भी भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। उज्जैन के 84 महादेव मंदिरों में विविध प्रकार के मंदिर शामिल हैं, और प्रत्येक मंदिर की अपनी अलग विशेषता, मान्यता और आध्यात्मिक महत्व है। ये मंदिर न केवल भगवान शिव के विभिन्न रूपों की उपासना के केंद्र हैं, बल्कि उज्जैन की धार्मिक विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को भी दर्शाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख और श्रद्धालुप्रिय मंदिर निम्नलिखित हैं -

महाकालेश्वर मंदिर - यह उज्जैन का सबसे प्रसिद्ध और पवित्र मंदिर है, जो भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यहाँ की भस्म आरती विशेष रूप से प्रसिद्ध है और देश-विदेश से श्रद्धालु इसे देखने आते हैं।

काल भैरव मंदिर - भगवान शिव के रौद्र और रक्षक रूप काल भैरव को समर्पित यह मंदिर तांत्रिक साधना और रहस्यमयी शक्तियों का केंद्र माना जाता है। यहां मद्य को प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है, जो इसे अन्य मंदिरों से विशिष्ट बनाता है।

हरसिद्धि मंदिर- यह शक्तिपीठ उज्जैन की प्रमुख देवी हरसिद्धि माता को समर्पित है। मंदिर की भव्यता और शक्ति की अनुभूति इसे शक्ति उपासकों के लिए एक अनिवार्य तीर्थ स्थल बनाती है। 84 महादेव मंदिर उज्जैन का महत्व न केवल धार्मिक है, बल्कि ये मंदिर उज्जैन की सांस्कृतिक विरासत को भी दर्शाते हैं। ये मंदिर उज्जैन के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र हैं, जहाँ वे भगवान शिव की पूजा और आराधना कर सकते हैं। इन मंदिरों में विभिन्न प्रकार के धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो उज्जैन की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देते हैं। उज्जैन के 84 महादेव मंदिर न केवल इस प्राचीन नगरी की भव्य धार्मिक परंपरा के प्रतीक हैं, बल्कि वे इसकी गहराई से जुड़ी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के भी जीवंत प्रमाण हैं। ये मंदिर केवल पत्थर और ईंटों की बनी संरचनाएं नहीं हैं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा के प्रतीक हैं, जिस पर चलकर श्रद्धालु आत्मिक शांति, चेतना की ऊँचाइयों और शिव तत्व की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। हर मंदिर में शिव के एक विशेष रूप की पूजा होती है, जो अलग-अलग भाव, शक्तियों और ऊर्जा को दर्शाते हैं। इन मंदिरों की परिक्रमा करना, मंत्रोच्चार, पूजा और ध्यान के माध्यम से जुड़ना, एक साधक को बाहरी दुनिया से भीतर की ओर ले जाने वाली यात्रा बन जाती है। यह यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मा के उत्थान की दिशा में एक गहन प्रयास है। ऐसे में, चाहे आप एक श्रद्धालु हों जो शिव के चरणों में भक्ति अर्पित करना चाहते हैं, या एक इतिहास प्रेमी हों जो इन मंदिरों के निर्माण, वास्तुशिल्प शैली और कथाओं में रुचि रखते हों, अथवा एक संस्कृति प्रेमी जो भारत की आध्यात्मिक परंपराओं को करीब से देखना चाहता हो – उज्जैन के 84 महादेव मंदिर आपके लिए एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करते हैं। यह स्थल न केवल देखने योग्य है, बल्कि अनुभव करने योग्य है – आत्मा को छू लेने वाली दिव्यता के साथ।

प्राकृतिक सौन्दर्य

प्राकृतिक सौन्दर्य प्रकृति को देखो,
उसकी आनंदविभोरता,
सौम्यता को देखो।
हरी-हरी पत्तियों को देखो,
कोमल प्रस्फुटन को देखो।
प्रथम रवि किरण को,
माणिक मोती जैसे,
शोभित होते हुए तो देखो।
कोमल कणिकाओं का,
गुदगुदाता स्वरूप तो देखो।
वसुन्धरा पर बिछी हुई,
हरी चादर को तो देखो।
हरी-हरी चादर पर गिरे हुए
ओस बिन्दुओं को देखो।
सुन्दर-सुन्दर पुष्पों से सजी हुई,
लतिकाओं को तो देखो।
फूलों का रसपान करने आये,
मादकता भरे भंवरों को देखो।
गगन में छाये हुए श्यामल,
काले-काले बादलों को देखो।
चकोर और चकोरी की मादकता को देखो।
चातक और चातकी के मधुर मिलन को देखो।
सुन्दर, स्वर्णिम प्रकृति को देखो।
अपने अन्त:स्तल को सौन्दर्यतम कर लो,
धरा के सम तुम भी सुन्दरतम हो जाओ।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

जनजातीय महिलाओं में नेतृत्व क्षमता और परिवेश

भारत के आदिवासी लोगों की जीवन शैली एक अमीर सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है, जो प्राकृतिक संतुलन और सामूहिक सहयोग के सिद्धांत पर आधारित है। ये समुदाय अक्सर जंगलों, पहाड़ियों और दूरदराज के स्थानों पर रहते हैं और अपनी आत्मनिर्भरता, प्राचीन ज्ञान और सामूहिकता के लिए जाने जाते हैं। इन सभी पहलुओं में महिलाओं की भागीदारी केवल परिवार के दायरे में नहीं रहती, बल्कि वे समुदाय के निर्णयों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे न सिर्फ परिवार की मजबूती हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव की प्रेरणा भी बनती जा रही हैं। मध्यप्रदेश के झाबुआ और आलीराजपुर जैसे आदिवासी इलाकों में महिलाएं अब पारंपरिक कार्यों से हटकर सामाजिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं। पहले उनकी जिम्मेदारियाँ कृषि, पशुपालन और घर के कामों तक ही सीमित थीं, लेकिन अब वे ग्राम पंचायतों, स्थानीय संगठनों और सामाजिक आंदोलनों में संलग्न हो गई हैं। यह परिवर्तन अचानक नहीं आया, बल्कि यह उनके जीवन संघर्षों, सामूहिक अनुभवों और आंतरिक शक्तियों का परिणाम है।

हालांकि यह उपलब्धि मान्यतायोग्य है, फिर भी आज भी अनेक कठिनाइयाँ मौजूद हैं। शिक्षा की कमी, पुरातन सामाजिक विश्वास, संसाधनों का अभाव और पारिवारिक दबाव –ये सभी बाधाएँ उनके विकास की राह में अवरोध उत्पन्न कर रही हैं। फिर भी, अनेक महिलाएँ इन चुनौतियों को पार करते हुए न केवल अपनी आवाज उठा रही हैं, बल्कि अन्य महिलाओं को भी यह प्रेरणा दे रही हैं कि वे अपने अधिकारों के प्रति सजग रहें और समाज के विकास में सक्रिय रूप से शामिल हों। आदिवासी समुदाय की एक खासियत यह है कि यहाँ समूह के विचार और सहमति से फैसले लेने की एक परंपरा रही है। महिलाएँ हमेशा से घरेलू मुद्दों के साथ-साथ सामुदायिक मुद्दों पर भी अपनी राय व्यक्त करती रही हैं। अब वे उन विषयों पर भी सक्रिय हो रही हैं जो संपूर्ण गाँव को प्रभावित करते हैं–जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, जल की रक्षा और पर्यावरण की सुरक्षा। उनकी सोच में व्यक्तिगत लाभ से बढ़कर समुदाय के कल्याण की भावना होती है।

आधुनिक तकनीक और संचार के नए तरीकों ने आदिवासी महिलाओं के लिए बाहरी दुनिया से संपर्क करने के अवसर प्रदान किए हैं। अब वे मोबाइल फोन, इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से सरकारी योजनाओं, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और बाजारों तक पहुँच बना रही हैं। कई महिलाएँ अब दूसरों को सिखा रही हैं कि फॉर्म कैसे भरें, बैंक से कर्ज कैसे लें या सरकारी सुविधाएँ कैसे प्राप्त करें। यह परिवर्तन धीरे-धीरे, लेकिन मजबूती से अपनी जगह बना रहा है। आर्थिक दृष्टि से ये महिलाएँ भी सक्षम हो रही हैं। वे पारंपरिक कच्चे माल से बने हस्त निर्मित सामान को स्वयं सहायता समूहों के जरिए स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ रही हैं। बांस से बनी कलाकृतियाँ, महुआ के बने उत्पाद और जड़ी-बूटियों से तैयार प्रसाद अब उनकी आय का एक माध्यम बनता जा रहा है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त कर रहा है। इससे उनमें आत्मनिर्भरता और आत्म विश्वास का विकास हो रहा है। आदिवासी संस्कृति में 'परिवेश' की अहमियत बहुत अधिक है। यह परिवेश प्रकृति के करीब और सामूहिक मूल्यों से संबंधित होता है, जिसके चलते महिलाओं के निर्णयों में संतुलन, स्थिरता और भविष्य दृष्टि का पता चलता है। जब वे निर्णय लेती हैं, तब समाज, पर्यावरण और परिवार के हितों का ध्यान रखा जाता है। यह नेतृत्व किसी औपचारिक अधिकार से नहीं, बल्कि सामुदायिक विश्वास के आधार पर उभरता है। कुछ महिलाओं ने समाज में फैली नकारात्मक चीजों, जैसे नशाखोरी, के खिलाफ भी अपनी बात रखी है। उन्होंने अपने गाँवों में शराब

पर प्रतिबंध लगाने के लिए मुहिम चलाई, समाज के विरोध का सामना किया, लेकिन अपने इरादों से पीछे नहीं हटीं। यह नेतृत्व किसी प्रकार के राजनीतिक अधिकार का नहीं, बल्कि नैतिक साहस और सामाजिक जिमेदारी का प्रतीक है। ऐसे प्रयास साबित करते हैं कि बदलाव लाने के लिए शक्ति या पद नहीं, बल्कि सच्चे इरादे और सामूहिक जागरूकता आवश्यक होते हैं।नई पीढ़ी की लड़कियाँ अब सिर्फ पढ़ाई तक ही नहीं पहुँची हैं। वे प्रतियोगी परीक्षाओं, शिक्षक प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं और प्रशासनिक फील्ड में भी आगे बढ़ रही हैं। वे अपने गाँव की पहली डॉक्टर, नर्स या शिक्षिका बनने का सपना देख रही हैं और इसे हासिल भी कर रही हैं। ये सफलताएँ केवल व्यक्तिगत नहीं हैं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं।आदिवासी महिलाओं का नेतृत्व किसी निर्धारित ढाँचे पर निर्भर नहीं है। यह उनके जीवन के अनुभवों, सामूहिक जागरूकता और आंतरिक मजबूती से आकार लेता है। यह नेतृत्व केवल दिखावे का नहीं है, बल्कि इसके प्रभाव में गहराई है। यह चुप रहने के बावजूद स्पष्ट है, और जब ये बोलती हैं, तो पूरे समाज की चेतना को हिला देती हैं।

हमें यह जानना आवश्यक है कि अगर इन औरतों को सही संसाधन, अवसर और प्रेरणा मिलती है, तो वे न केवल अपने गाँव में, बल्कि पूरे समुदाय में बदलाव ला सकेंगी। उनकी योग्यता सिर्फ सहयोग तक ही सीमित नहीं है–वे निर्माताओं और मार्गदर्शकों के रूप में भी उभर सकती हैं।

व्रतों और अनुष्ठानों के वैज्ञानिक लाभ

हस्ती पटेल

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया को अविवाहित और विवाहित महिलाएं मनचाहे वर, पति की लंबी आयु और सुखद वैवाहिक जीवन के लिए हरितालिका व्रत करतीं हैं। धार्मिक और पौराणिक मान्यताओं के लिए भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित हरतालिका तीज का व्रत करती हैं। सनातन संस्कृति में धार्मिक अनुष्ठान केवल धर्म ही नहीं बल्कि प्रकृति, समाज और व्यक्ति के स्वास्थ्य से जुड़े हुए हैं।

हरितालिका तीज को मनाने का अपना वैज्ञानिक महत्व भी है। व्रत को प्रारंभ करते समय दही-चूड़ा खाया जाता है, जिसमें कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन और आवश्यक विटामिन होते हैं जो व्रत करने में सहयोग करते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपवास, पूजा व व्रत करने से मस्तिष्क में डोपामिन तथा सेरोटोनिन जैसे हार्मोंस का संतुलन सुधरता है, जिससे मन प्रसन्न रहता है।

व्रत में स्त्रियां हाथों से पैरों तक सजती संवरती हैं, नाचना, गाना-बजाना, शिव पार्वती की पूजा करना त्यौहार को मनाने की प्रक्रिया है। शिव पार्वती की पूजा को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो शायद पूजा में चढ़ाए फूल-पत्तियों से महिलाओं का परिचय कराने के लिए उस समय समाज-समुदाय ने इस पर्व की शुरुआत की हो। वर्षा ऋतु के समापन पर जब वात, पित्त और कफ तीनों दोषों में विशेष असंतुलन होता है, तब उपवास करने से पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है। इस त्यौहार पर महिलाओं द्वारा मेंहदी लगाई जाती हैं जो कि त्वचा को फंगल और बैक्टीरिया के संक्रमण से बचाती है और शरीर को ठंडक प्रदान करती है। सनातन संस्कृति में हर त्यौहार केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि मनुष्य को प्रकृति और समय के साथ संतुलन बनाने की कला सिखाता है। हरतालिका तीज के अगले दिन ही आने वाला गणेश चतुर्थी का त्यौहार सामूहिक मिलन का रूप है। इतिहास के पन्नों को पलटें तो यह बात सामने आती है कि गणेश चतुर्थी भगवान का जन्मदिवस मनाने के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण समाज को एकत्र करने के लिए किया गया था। उस समय अंग्रेजी शासन ने बड़े जनसमूह के एकत्रित होने पर पाबंदियां लगा दी थीं। इस बहाने लोग एकत्र हुए जिससे जनजागरण फैलने लगा और स्वतंत्रता आंदोलन को नई चेतना मिली। प्राकृतिक दृष्टि से यह पर्व देखें तो यह वह समय है जब जलाशयों में पानी ताजा होता है और मिट्टी में नमी रहती है। गणेशजी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजा करना और फिर उसे जल में विसर्जित करना प्रकृति के चक्र को दर्शाता है। इससे यह समझा जा सकता है, **प्रकृति से जो लिया जाता वह उसी में समा भी जाता है।** गणेश चतुर्थी न केवल एक धार्मिक पर्व है किंतु सामूहिकता का प्रतीक है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि इन पर्वों में भाग लेने से खुशी, आपसी विश्वास और सामाजिक जुड़ाव मजबूत होता है। परिवार व मोहल्ले के लोग मिलकर गणेश स्थापना, पूजा व विसर्जन करते हैं जो कि सामूहिकता, प्राकृतिक संतुलन एवं मानसिक प्रसन्नता और ऐतिहासिक चेतना को जीवित रखता है। इसी के बाद आने वाला पर्व है ऋषि पंचमी। यह ठीक गणेश चतुर्थी के अगले दिन मनाया जाता है। यह पर्व, ऋषियों के ज्ञान, तप और समाज को दिए गए दिशा-निर्देशों की स्मृति में समर्पित है।धार्मिक दृष्टि से इस दिन महिलाओं को सर्वप्रथम अपामार्ग (चिरचिटा) की दंडी से स्नान करने को कहा गया है। इसके न होने पर तुलसी, दूर्वा घास, बेलपत्र या अडूसा को भी लिया जा सकता है। सनातन संस्कृति में माना जाता है कि पेड़-पौधे देवस्वरूप होते हैं और उनसे स्नान करना प्रकृति के प्रति सम्मान प्रकट करना है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो इन हरी टहनियों में औषधीय गुण होते हैं। जब महिलाएं इनका प्रयोग करती हैं तो त्वचा पर हल्की मालिश से रक्त संचार बेहतर होता है और त्वचा रोगों से भी बचाव होता है।

व्रत और उपवास का भी गहरा वैज्ञानिक आधार है। ऋतु परिवर्तन के इस समय पेट को हल्का रखना और फलाहार करना पाचन तंत्र को दुरुस्त करता है। ऋषि पंचमी यह संदेश देती है कि जीवन में ऋषियों द्वारा बताए गए धर्म, संयम और प्रकृति से जुड़ाव को न भूलें। उपरोक्त तीनों त्यौहारों में एक गहरी समानता नजर आती है। सभी प्रकृति, शरीर और मन के संतुलन की बात करते हैं - व्रत के मार्ग से। व्रत के माध्यम से शारीरिक व मानसिक शुद्धि होती है। यह तीनों त्यौहार स्वास्थ्य, संयमित और सामूहिक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

पर्यावरण हमारा घर हमारी जिम्मेदारी

श्रीमति मनीषा शिवम जोशी

हरेक प्राणी को जीवन जीने के लिए प्रकृति स्वरूप पर्यावरण की आवश्यकता होती है। धरती पर हम जिस परिवेश में रहते उसे पर्यावरण कहते हैं जो हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा होने के साथ ही जीवन जीने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करता है, स्वच्छ वायु, जल, अन्न और आश्रय। पर्यावरण आस-पास के उन सभी जैविक और अजैविक घटकों का संग्रह होने के साथ हमारे जीवन को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। यह एक जटिल और नाजुक संतुलन है, जो पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। स्वस्थ पर्यावरण हमें स्वस्थ वायु में सांस लेने, शुद्ध जल और उपजाऊ भूमि पर अन्न उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है और यह हमें प्राकृतिक सुंदरता और जैव विविधता का आनंद लेने का अवसर भी देता है। किंतु वर्तमान दौर में हमारी लापरवाही से पर्यावरण बिगे रहा है। जिसके जिमेदार भी हम ही हैं।

पर्यावरणीय असंतुलन के कारण- दुर्भाग्य से, मानवीय गतिविधियों ने इस नाजुक संतुलन को बुरी तरह प्रभावित किया है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वनों की कटाई और प्रदूषण जैसी गतिविधियों ने पर्यावरण पर गंभीर दबाव डाला है। कारखानों और वाहनों से निकलने वाला धुआं वायु प्रदूषण का कारण बनता है जिससे सांस लेने में कठिनाई व अन्य स्वास्थ्य समस्याएं मनुष्य जीवन के साथ वन्य प्राणियों एवं जीव-जंतु, पशु-पक्षियों को भी हानि पहुँचा रही है। औद्योगिक कचरा और सीवेज जल स्त्रोतों को दूषित कर रहे जिससे जल स्त्रोत में कमी और जलीय जीवन का विनाश हो रहा है। वनों की अंधाधुंध कटाई से मिट्टी का कटाव बढ़ रहा और ग्लोबल वॉर्मिंग में वृद्धि हो रही है। प्लास्टिक व गैर बायो डिग्रेडेबल कचरे का बढ़ता ढेर प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है जो मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर रहा है।

जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभाव- पर्यावरण प्रदूषण का ही एक भयावह परिणाम जलवायु परिवर्तन है। पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ रहा जिससे ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र का स्तर ऊपर उठ रहा तथा दुनिया भर में बाढ़, सूखा, तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं। इसका सीधा असर कृषि जल संसाधनों और जैविक विविधता पर देखने में आ रहा है जिससे असंख्य लोगों का जीवन प्रभावित हो रहा है। हमारी जिंमेदारी- समाधान की ओर बढ़ना यह सिर्फ सरकार की ही नहीं, बल्कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि हम पर्यावरण संरक्षण के लिए कदम उठाएं। अपने-अपने क्षेत्रों में छोटे-छोटे प्रयासों से ही बड़ा और सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। तत्काल के कुछ वर्ष पूर्व ही विश्व स्तर की गंभीर कोरोना जैसी महामारी में ऑक्सीजन की कमी चारों ओर महसूस हो रही थी। तब हमें पेड़ों के द्वारा ऑक्सीजन का महत्व समझ में आया। फिर भी मनुष्य इतना खुदगर्ज हो गया कि बीमारी के जाते ही प्रकृति के प्रति जागरूकता की कमी मनुष्य में दिखाई दे रही है। वृक्ष ऑक्सीजन के स्रोत हैं, वे कार्बन-डाई-ऑक्साइड को अवशोषित करते हैं इसलिए पेड़ लगाकर हम वायु प्रदूषण को कम करते हुए जलवायु परिवर्तन का हम मजबूती के साथ सामना कर सकते हैं। प्लास्टिक का उपयोग कम करें रीयूजेबल बैग, बोतलें और कंटेनर का इस्तेमाल करें। प्लास्टिक सैंकड़ों सालों तक प्रकृति में रहता है और मिट्टी और जल को प्रदूषित करता है।

ऊर्जा बचाएं - बिजली का कम उपयोग करें अनावश्यक बर्बादी रोकें और वर्षा जल संचयन जैसे तरीकों को अपनाएं।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग- निजी वाहनों के बजाए सार्वजनिक परिवहन, कम दूरी पर साइकिल या पैदल चलने को प्राथमिकता दें जिससे वायु प्रदूषण कम हो।

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पर्यावरण और जीवित चीजों के बीच नियमित रूप से विभिन्न चक्र घटित होते रहते हैं अगर किसी भी कारण से यह चक्र बिगड़ जाता है तो प्रकृति का भी संतुलन बिगड़ जाता है जो कि अंततः मानव जीवन को प्रभावित करता है। आजकल हम किसी भी चीज को सेहतमंद नहीं कह सकते क्योंकि जो हम खाते हैं वो पहले से ही कृत्रिम उर्वरकों के दुष्प्रभाव से प्रभावित हो चुका है और हमारे शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता को कमजोर कर रहा है। पर्यावरण के संग्रह को धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो कई प्रसंग मिलते हैं जैसे भरत मिलाप के समय श्रीराम द्वारा पूछा जाना कि अयोध्या के वन सुरक्षित हैं कि नहीं तथा श्रीकृष्ण द्वारा गिरिराज पर्वत की पूजा करना। नदियों पेड़ों का पूजा जाना। यही सब हमें आदि अनादि काल से समझाया गया है किन्तु हम यह भूलते जा रहे हैं। इसे याद दिलाने की सख्त आवश्यकता है यदि अभी भी ध्यान नहीं दिया गया तो हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ व सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित नहीं कर पाएंगे। हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारा घर है और इसकी देखभाल करना हमारा नैतिक कर्तव्य।

इठलाता शहरीकरण और सिमटती कृषि

दुर्गेश कुमार साध

पिछले दिनों मेरा निमाड़ स्थित पैतृक गाँव जाना हुआ था। खेत में पहुँचा, तो मैं यह देखकर भौंचक्का रह गया कि हमारे खेत के ठीक सामने वाले खेत में बड़े शहरों की तर्ज पर एक अच्छी-ख़ासी **'टाऊनशिप'** का निर्माण हो चुका था। इस बात की कल्पना मैंने कभी नहीं की थी कि इस गाँव में यह हो भी सकता है और वह भी इतनी जल्दी। वह टाऊनशिप अपनी निर्मिती पर इस कदर इठला रही थी कि मानो आसपास के खेतों को निश्चयपूर्वक चिढ़ाकर यह कह रही हो कि **''कुछ समय बाद तुम्हारा भी इसी प्रकार मतांतरण हो जाएगा और तुम भी मेरी जमात में शामिल हो जाओगे।''** आश्चर्य की बात यह भी है कि उक्त गाँव जनसंख्या के लिहाज से बहुत छोटा है, वहाँ इस प्रकार का शहरीकरण मन में कई सारे प्रश्नों को उपजा गया, क्योंकि एक तो वह टाउनशिप गाँव की सीमा के बाहरी छोर पर थी, दूसरा उसके निर्माण के लिए एक-दो बड़े खेतों की **'बलि'** दे दी गई थी। हमारे यहाँ शहरों की सीमाओं को बढ़ाने के लिए कुछ वर्षों में परिसीमन की प्रक्रिया की जाती है और इस प्रक्रिया में शहरों की सीमाओं से लगे हुए गाँवों को शहरों में सम्मिलित किया जाता है। रातों-रात, जो एक जीता-जागता गाँव होता है, वह अब शहर का अंग हो जाता है। गाँव के लोग अब खुश होते हैं कि अब हम भी शहरी हो चुके हैं, सभ्य हो चुके हैं। अब हमारे गाँव की हालत सुधरेगी, यहाँ पक्की सड़कें बनेंगी, बिजली की आपूर्ति-व्यवस्था ठीक हो जाएगी, शायद कुछ अच्छे स्कूल भी खोल दिए जाएँ और अगर नहीं भी खुले, तो निजी स्कूल वालों को यहाँ बस भेजने में दिक्कत नहीं होगी। यह भी कि अब हमारे घरों की ज़मीनों के भाव एकाएक बढ़ जाएँगे और हम और अमीर हो जाएँगे। यह दुर्भाग्य है कि हम इसके आगे की सोचना भी नहीं चाहते। हम यह सोचना ही नहीं चाहते कि हम जिसे प्रगति या विकास कह रहे हैं, उस तथाकथित विकास के लिए हम क्या पर्यावरणीय कीमत चुका रहे हैं! हमारे देश पर ईश्वर की ऐसी कृपा रही है कि पूरे विश्व में सबसे अधिक खेती योग्य भूमि भारत के पास है, तभी इसे **'सुजलाम्-सुफलाम्'** कहा जाता है। भारत की अर्थव्यवस्था अधिकांशतया केवल इसीलिए स्थिर रहती है, क्योंकि यह कृषि-आधारित है। कोरोना जैसी महामारी एवं लॉकडाउन के बाद भी हमारी अर्थव्यवस्था केवल इसीलिए बची रही कि उसकी रीढ़ कृषि है। और इस कृषि जैसे महान कार्य की आज हम क्या दुर्गति करने पर उतारू हो चुके हैं, यह गहन चिंतनीय है। आज की पीढ़ी, खेती करने की अपेक्षा किसी ऑफिस में चाय-पानी पिलाने जैसी नौकरी करने को अधिक श्रेयस्कर समझने लगी है, तो इसके पीछे क्या कारण हैं, यह समझने की आज महती आवश्यकता है। इसके पीछे जो कुछ कारण दिखते हैं, उनमें एक तो यह है कि कृषि के कार्य को नई पीढ़ी तुच्छ समझती है। दूसरा, शहरों का चकाचौंध भरा जीवन हमें अधिक आकर्षित करता है। तीसरा, कृषि-कार्य को यदि योजनाबद्ध तरीके से न किया जाए, तो यह घाटे का सौदा भी बन सकता है। अब इन तीनों कारणों का विचार करते हैं, तो पाते हैं कि कृषि का कार्य एक महान और सेवा-कार्य है। जो देश को भोजन करवाता है, वह कार्य आखिर तुच्छ कैसे हो सकता है? दूसरा, शहरी जीवन सिर्फ दूर से ही आकर्षित करता है। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कि यह कई बार घाटे का सौदा हो जाता है, तो यह सोचें कि कौन-सा ऐसा व्यापार है, जिसमें नफ़ा-नुक़सान नहीं होता हो? घाटा यदि होता है, तो उसके कारणों को दुरुस्त किया जाना चाहिए, न कि खेती से छुटकारा पाने का विचार करना चाहिए।

आज एक खेत का यदि रहवास के लिए डायवर्जन होता है, तो एक अन्न उत्पादक कम होता है, हजारों कीट-पतंगे, जीव-जन्तुओं का रहवास और भोजन छिनता है और एक परिवार की आजीविका का ह्रास होता है। हमें चाहिए कि रहवास, कृषि योग्य भूमि पर न होकर अयोग्य भूमि पर बनाए जों और इसके डायवर्जन पर लगाम लगाई जाए।

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - ९९७७७१२५६१
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

पेरियार जी की 'सच्ची रामायण' की सच्चाई

कुणाल पाटीदार

श्रीराम, एक ऐसे पुरुष जिन्हें किसी ने अवतारी बतलाया तो किसी ने महामानव तो किसी ने नीच मानस। श्रीराम -एक नीच मानस यह बात सुनने में बहुत अजीब और तर्कहीन लगती है। परन्तु सभी लेखकों, तत्कालीन नेताओं (चाहे किसी भी काल/ युग/ क्षेत्र के हों) ने अपनी-अपनी विचारधारा को साधने के लिए उस मानव को महान या नीच का विशेषण दिया। किसी भी लेखक का लिखने के प्रति कोई न कोई उद्देश्य होता है, जैसे कि किसी का उद्देश्य स्व-प्रशंसा या परहित या सामाजिक चेतना लाना आदि कुछ भी हो सकता है।

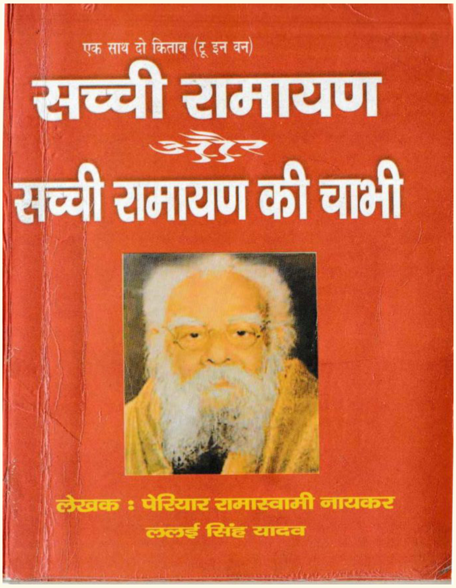

भारतभूमि में ऐसे ही एक तथाकथित **'महान'** विचारक प्रकट हुए जिनका नाम है इ वी रामासामी पेरियार स्वामी (1879-1973) जो द्रविड़ राजनीति के वास्तुकार कहे जाते हैं, जिन्हें आजकल के वामपंथी, लाल झंडाधारी या अर्बन नक्सल अपने गुरु या मार्गदर्शक के रूप में मानते हैं। पेरियार जी ने अपनी पुस्तक **'सच्ची रामायण'** में वाल्मीकि रामायण या अन्य कोई भी रामायण जिसमें श्रीराम को आदर्श पुरुष बताया गया है, को न सिर्फ सिरे से नकार दिया बल्कि माता सीता और अन्य रामायण पात्रों का चरित्र हनन भी किया। यदि कोई वाल्मीकि रामायण को समझेगा तो उसे श्रीराम सर्वथा दोषरहित लगेंगे लेकिन यदि कोई पेरियार जी की **'सच्ची रामायण'** पढ़ेगा तो उसे श्रीराम गुणरहित लगेंगे। लेकिन वे ऐसा करने में समर्थ क्यों हुए? आखिरकार पेरियार अपनी रचना में इस प्रकार के दोषारोपण में सफल कैसे हुए?

यदि आप सोच रहे हैं कि श्रीराम दोषी हैं या गुणी हैं तो यह निर्भर करता है कि आप किस राम को देख रहे हैं। अब यह कैसे? तो जिस प्रकार से किसी कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण लेखक पर निर्भर करता है उसी प्रकार किसी भी महाकाव्य या कृति में पात्रों का चरित्र लेखक ही तो निर्धारित करते हैं फिर यह आप और मुझ जैसे सामान्य से मानव पर निर्भर करता है कि आप किस पात्र को भगवान मानते हैं और किसे राक्षस। जैसे कि जैन धर्म का उद्देश्य अहिंसा को बोवा देना है इसलिए जैन रामायण में श्रीराम अहिंसावादी हैं जिन्होंने रावण वध नहीं किया बल्कि लक्ष्मण जी ने रावण वध किया।

लेकिन लेखक को कौन सी घटनाएं या वस्तुएं प्रेरित करती हैं यह तो उस काल की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं मौलिक संरचना ही निर्धारित करती है। पेरियार ने ब्राह्मणों का विरोध किया जिसकी शायद उस समय उनके क्षेत्र में जरूरत रही होगी लेकिन इस विरोध में उन्होंने श्रीराम तक को नहीं छोड़ा और **'सच्ची रामायण'** के रूप में ऐसी कृति दी जो अलग-अलग संदर्भों से बनी है और हो सकता है कि इससे उन्हें वाहवाही या प्रशंसा मिली हो या उनके किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति हुई हो। वर्तमान में रामायण के लगभग 200 संस्करण हैं। पेरियार जी ने अपनी कृति में अलग-अलग रामायणों जैसे वाल्मीकिकृत रामायण, जैन रामायण, तुलसी रामायण (रामचरितमानस) एवं ऐसी ही अन्य कृतियों का सन्दर्भ लिया है। अब स्वाभाविक सी बात है कि अलग-अलग धर्म, संप्रदाय, मतों आदि की सामाजिक संरचना अलग-अलग होती है अतः इनके द्वारा रचित या इनके सहयोग से रचित रामायणों में श्रीराम एवं अन्य पात्रों का चरित्र/वर्णन लेखकों/प्रायोजकों के हित को साधने वाला होता है। भारत या विश्व में कोई एक रामायण न होकर अनेक रामायण लिखी गई हैं अतः स्वाभाविक है कि सभी रामायणों में भिन्नता होगी ही। यदि कोई लेखक स्वयं लालची, देहभोगी होगा तो वह स्वयं ऐसी कृति की रचना करेगा जिसमें रामायण के पात्र स्वयं लेखक की प्रकृति के अनुरूप होंगे जिससे लेखक के दुष्कृत्य को एक वैधानिकता या सहमति मिले। (जैसे कुछ नशेड़ी शिवजी का नाम लेकर खुद के नशा करने को सही बताते हैं) इसलिए मेरे विचार में हमें इस प्रकार की विकृत मानसिकता की उपज रूपी **'सच्ची रामायणों'** से दूर न रहते हुए इनकी वास्तविकता को सर्वत्र फैलाकर अपनी धर्मरक्षा करनी चाहिये।

प्रकृति कुछ भूलती नहीं -जो दोगे, वही लौटेगा

स्वाति सिंह साहिबा, इंदौर

प्रकृतिः एक कृति, जो लौटाती है वही जो हम उसे देते हैं। प्रकृति – इसका अर्थ है प्रथम कृति। आपकी, मेरी या समूचे संसार की। आपकी और मेरी दृष्टि अलग हो सकती है – ठीक वैसे ही जैसे सिक्के के दो पहलू। परंतु प्रकृति तो एक ही है और उसका स्वभाव भी एक – जो उसे देंगे, वही वह लौटाएगी। अच्छा देंगे तो सौ गुना अधिक वरदान, बुरा देंगे तो बस... विनाश। हिमाचल की गोद में कुछ समय पहले हिमाचल जाने का अवसर मिला। बड़े-बड़े हरे-भरे पहाड़, शांत बहती नदियाँ, और पहाड़ों से छलकते झरने – जिनका जल पीने के लिए किसी फिल्टर की आवश्यकता नहीं। हवा इतनी शुद्ध, इतनी ठंडी कि यकीन ही नहीं होता कि ये भी इसी पृथ्वी का हिस्सा है।

दिल्ली से हिमाचल गया था – इसलिए तुलना तो स्वाभाविक थी। दिल्ली में सांस लेना कठिन, हर ओर वाहनों का कानफोडू शोर, और गर्मी ऐसी कि पसीना भी थक जाए। यहाँ मनुष्य न चाहते हुए भी स्वार्थी बन जाता है। प्राकृतिक खेती और तंदुरुस्त जीवन हिमाचल में जो लोग मिले, उनमें न कोई स्वार्थ, न मोलभाव। खुद के लिए नहीं, धरती के लिए जीने वाले लोग। खेती रासायनिक खाद से नहीं, प्राकृतिक विधि से – साल में एक या दो फसलें। न लालच अधिक पैदावार का, न मुनाफे का मोह। शायद इसीलिए वहां की हवा भी स्वस्थ, और लोग भी तंदुरुस्त। हाइब्रिड का जहर और कम उम्र की मौतें वहीं दूसरी ओर, हमारे शहरों और गांवों में चार फसलों की होड़, हाइब्रिड बीज और रसायनों का महासागर। नतीजा – मिट्टी बेजान, शरीर बीमार। कम उम्र में हृदयगति रुकना आम बात। 8 साल के बच्चे से लेकर 28 साल के युवा तक – कौन नहीं चपेट में है?

प्रकृति कुछ भूलती नहीं – जो दोगे, वही वापिस लौटेगा। श्रावणः प्रकृति के श्रृंगार का महीना अभी समय है श्रावण मास का – वर्ष का सबसे पावन महीना। कहते हैं, यह प्रकृति के श्रृंगार का समय होता है। पर सवाल ये है – क्या अब भी वो श्रृंगार हो पा रहा है? न बारिश की रिमझिम, न सावन का हरापन। कहीं बाढ़, तो कहीं सूखा। और पर्यावरण दिवस? एक पौधा पकड़कर चार लोगों की सेल्फी – और बस! फिर किसी को फर्क नहीं पड़ता वो पौधा जीवित है या नहीं। विकास या विनाश? विकास हो रहा है – चार लेन, छः लेन, फ्लायओवर के ऊपर फ्लायओवर। सड़कें इतनी सीधी कि जैसे सांप-सीढ़ी का खेल हो। सिर्फ सांप बिल खोते जा रहे हैं और सीढ़ियाँ पेड़ों को काटकर बनाई जा रही हैं। सड़कें बनाने के लिए सदियों पुराने वृक्ष काटे जा रहे हैं, बदले में डिवाइडर पर बोगनवेलिया के पौधे। क्यों? क्या ये सही है? सिंहस्थ और पेड़ों की बलि साल 2028 का सिंहस्थ उज्जैन में होना है – माना गया कि महाकालेश्वर क्षेत्र का विकास जरूरी है। पर क्या विकास का अर्थ छायादार वृक्षों की कटाई है?

सिंहस्थ – एक पर्व जो अमृत समान होता है – क्या उसके नाम पर प्राणवायु देने वाले पेड़ काटना धार्मिकता है? आज तकनीक है – बड़े-बड़े पेड़ों को स्थानांतरित किया जा सकता है। पर हम उन्हें काट डालते हैं। यह कैसा विकास है? सिर्फ लेखों से नहीं बचेगा पर्यावरण लेख, आलेख, पौधारोपण – यह सब पर्याप्त नहीं है। पर्यावरण को बचाने के लिए मनुष्य को अपनी सोच

बदलनी होगी। हर व्यक्ति कहता है **एक पेड़ तो जरूर लगाना चाहिए।** पर घर के बाहर आम लगाने पर कहते हैं **इसकी जड़ें फैलती हैं** और कुछ साल बाद कटवा देते हैं।

क्या यही समझदारी है? पीपल, बरगद और जीवन की जड़ें कभी मोहल्लों में पीपल और नीम के नीचे शांति से समय बिताते थे। आज पीपल ढूँढना पड़ता है और बरगद बस किताबों में मिलता है। जबकि ये वही वृक्ष हैं जिनका जीवन 200-300 साल का होता है, जिन्हें ऑक्सीजन फैक्टरी कहा जाता है। कोरोना के बाद भी अगर यह बात नहीं समझी – तो मानव जाति के पतन को कोई नहीं रोक सकता। अंत में हम मंगल और चाँद पर जीवन ढूँढ रहे हैं, जबकि पृथ्वी पर जहाँ जीवन है – उसे ही नष्ट कर रहे हैं। संभलना होगा, सजग होना होगा। अब भी नहीं तो कभी नहीं। वरना प्रकृति लौटाएगी – पर इस बार सिर्फ विनाश।

रक्षाबंधन : एक पर्व, एक प्रतीक, एक सामाजिक दर्पण

मौसम सिंह राजपूत, इंदौर

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक ऐसा उल्लासपूर्ण पर्व है, जो भाई-बहन के प्रेम, स्नेह और सुरक्षा के अटूट संबंध को दर्शाता है। हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्यौहार केवल एक रक्षासूत्र बाँधने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों की गरिमा, विश्वास और कर्तव्यों की पुनःस्थापना का अवसर भी है।

परंपरा और आस्था का संगम - भारतीय ग्रंथों में रक्षाबंधन की उत्पत्ति के कई संदर्भ मिलते हैं। भगवान कृष्ण ने द्रौपदी की लाज की रक्षा की, क्योंकि उसने उनके हाथ पर राखी बाँधी थी। यह प्रसंग इस बात का प्रतीक है कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के बीच रक्त संबंध तक सीमित नहीं, बल्कि यह भावनात्मक और नैतिक उत्तरदायित्व का प्रतीक भी है।

समाज में बदलता हुआ परिदृश्य - आज के बदलते समाज में रक्षाबंधन की परंपरा ने एक नया स्वरूप ले लिया है। यह पर्व अब नारी सशक्तिकरण, समानता और सुरक्षा जैसे विषयों को भी स्पर्श कर रहा है। बहन अब केवल रक्षा की याचना नहीं करती, बल्कि अपने भाई की भी रक्षा का संकल्प लेती है। कई स्थानों पर बहनें अपने छोटे भाई को शिक्षा, संस्कार और आत्मनिर्भरता की राह दिखा रही हैं। कुछ जगहों पर बहनें अपने भाइयों को अंगदान, पर्यावरण सुरक्षा और नारी सेमान की शपथ दिलवाती हैं।

समाज के वंचित वर्गों में रक्षाबंधन - आज रक्षाबंधन केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। अनेक सामाजिक संगठनों और विद्यालयों में बच्चियाँ सैनिकों, पुलिसकर्मियों, डॉक्टर्स, सफाईकर्मियों और बुजुर्गों को राखी बाँधकर समाज के संरक्षक की भूमिका को नमन कर रही हैं।

इससे यह पर्व सामाजिक समरसता और कर्तव्य भावना का वाहक बन चुका है।

राखी का नया रूप - सामूहिक चेतना की ओर - वर्तमान में जब समाज अनेक प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है–जैसे स्त्री असुरक्षा, बाल अपराध, घरेलू हिंसा, मानसिक अवसाद–ऐसे समय में रक्षाबंधन का संदेश और अधिक व्यापक हो गया है। आज की **राखी** केवल धागा नहीं, एक चेतना है–जो कहती है कि हर पुरुष नारी की गरिमा की रक्षा का व्रत ले, हर बहन अपने भाई के चरित्र, संस्कार और मानवता की रक्षा करे।

निष्कर्ष - रक्षाबंधन केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का स्मरण है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि रिश्ते केवल खून से नहीं, भावना और कर्तव्य से बनते हैं। आज आवश्यकता है कि हम इस पर्व के मर्म को समझें और इसे सामाजिक सुधार, स्त्री सुरक्षा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बनाएं।

राखी बाँधने की नहीं, रिश्तों को बाँधने की जरूरत है–स्नेह, समर्पण और सुरक्षा के धागों से।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस

कु.प्रियंका जायसवाल, सोनकच्छ

मुझे युवाओं में विश्वास है, आधुनिक पीढ़ी में विश्वास है। इन्हें में से मेरे कार्यकर्ता आयेंगे वे पूरे देश की समस्याओं का समाधान मेरे शेरों की तरह करेंगे - **स्वामी विवेकानंद**

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस प्रत्येक वर्ष 12अगस्त पूरे विश्व में मनाया जाता है । यह दिन युवाओं के प्रति जागरूकता और प्रेरणा का प्रतीत माना जाता हैं, संयुक्त राष्ट्र ने इस दिवस की शुरुआत युवाओं के मुद्दों को वैश्विक स्तर पर प्राथमिकता व प्रोत्साहन के लिए सन् 1999 में की थी।

युवा एक ऐसा शब्द है, जिसे सुनते ही लगे बस जोश व उत्साह से परिपूर्ण व्यक्ति। वे जोश व नवाचार से समाज को बदलने की शक्ति रखते हैं तथा भारत जैसे देश में जहां आबादी 60 प्रतिशत हिस्सा ही युवाओं से परिपूर्ण हो, वहां युवाओं की महत्वता को सिद्ध करने की आवश्यकता मुझे महसूस नहीं होती हैं।

परन्तु पश्चिमी सभ्यता की ओर अग्रसर तथा नशे की लत में धूत आज का युवा अपना जीवन स्वयं ही बिगाड़ रहा है। शिक्षा केवल एक नौकरी पाने का साधन बनकर रह गई हैं आज जितनी बड़ी डिग्री उतना अधिक वेतन, और एन सब दौड़ भाग में आज का युवा अपने कर्तव्यों से कही दूर ही रह जाता हैं यूवाओ को केवल डिग्री धारक नहीं, बल्कि जिम्मेदार , नैतिक और विचारशील नागरिक बनना चाहिए। इस दौर में युवा अनेक समस्याओं से जूझ रहा है परंतु सबसे बड़ी समस्या है, ये युवाओं के विचारों के विपरीत यह समाज।

यह समाज के अधिकांश व्यक्ति अपनी रूढ़िवादी मानसिकता के अधीन आज की पीढ़ी को रखने को कोशिश करते है जो मेरी नजर में उचित नहीं हैं । आज का युवा तकनीकी रूप से सक्षम है, वे चाहे तो देश की उन्नति में अद्वितीय योगदान दे सकते हैं, हमारे भारत जैसे देश में अनेक युवा भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, स्वामी विवेकानंद इत्यादि ने अपने योगदान से देश को एक नई दिशा प्रदान की हैं।

परिवर्तन तो संसार का नियम है। आज के युवा को प्राचीनता और आधुनिकता दोनों को अपनाकर इस देश में प्रगति में सहयोग करना होगा। यदि युवाओं की ऊर्जा को आज सही दिशा में लगाए तभी भारत के विश्वगुरु बनने के सपने को साकार किया जा सकता हैं एक कहावत है यदि जीवन के 25 साल तक मेहनत कर ली तो जीवन के 75 साल सुधारने में मेहनत की आवश्यकता नहीं, परन्तु यदि 25 साल तक मेहनत नहीं की तब आगे के जीवन को बिगड़ने में मेहनत नहीं करनी होगी।यदि आज सफल होने का प्रयास नहीं किया गया तो असफल होने के लिए मेहनत नहीं करनी होगी आज सत्संग में नहीं बैठे तो बुरी संग करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आज का युवा कर्मशील, शिक्षित और जागरूक होगा तभी देश का भविष्य उज्जवल होगा।

हालांकि 100 वर्ष जीवन, केवल आज एक कहावत ही रह गई हैं। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस केवल एक दिवस होकर युवाओं की भविष्य की नींव रखने शुभ अवसर है इस दिन सभी नागरिकों को संकल्प लेना चाहिए कि आज एक ऐसे समाज का निर्माण किया जाएं जिसमें रहकर कल का युवा अपने सपने देख सकें और उनको उड़ान दे सके। जिस दिन आपके सामने कोई समस्या न आए आप यकीन कर सकते हैं कि आप गलत रास्ते पर हैं। - **स्वामी विवेकानंद**

हिंद का दुश्मन है जमीयत उलेमा ए हिंद

मौसम सिंह राजपूत, इंदौर

पिछले दिनों देश में दो बड़ी निराशाजनक घटनाएं सामने आयीं और इन दोनों ही घटनाओं के मूल में एक संगठन का नाम चर्चा में रहा, बहुत से लोगों ने इसका नाम पहली बार सुना। कन्हैयालाल हत्याकांड पर बनी फिल्म पर जब दिल्ली हाइकोर्ट ने बैन लगा दिया तब विचार आया कि हर बार की तरह यहां भी दिल्ली के कट्टर बुद्धिजीवी धूर्तानंद या खर-दूषण जैसे किसी व्यक्ति ने याचिका लगाई होगी लेकिन एक नाम देखकर फिर स्पष्ट हो गया कि अपनी करतूतें छिपाने के लिए षड्यंत्रकारी खुद ही पाँव पटक रहे हैं। यह याचिका **जमीयत उलेमा ए हिंद** नामक संगठन ने लगाई थी। दूसरी घटना जिसे सुनकर पूरे देश में आक्रोश है वह है 2006 के मुंबई ब्लास्ट के 12 आरोपियों को हाईकोर्ट द्वारा बरी किया जाना और यहाँ भी इन आरोपियों का केस जमीयत उलेमा ए हिंद लड़ रहा था। हर देशद्रोही को कानूनी और आर्थिक मदद करने वाले इस संगठन के इतिहास और वर्तमान को समझना जरूरी है ताकि भारत के भविष्य को षड्यंत्रों के विष से मुक्त रखा जा सके। ऐसे अनेक संगठन बड़े स्तर पर सक्रिय हैं जो समाजसेवा और वर्ग विशेष के प्रतिनिधित्व के नाम पर संगठित रूप से लगातार राष्ट्रविरोधी काम कर रहे हैं, ऐसे संगठन धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देकर उपद्रव पैदा कर रहे हैं, वहीं आतंकवादियों को सब तरह से सहायता करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक भयानक खतरा बनते जा रहे हैं। ऐसे ही घातक संगठनों में से एक है **जमीयत उलेमा ए हिंद।** जो काम इंडियन मुजाहिदीन, सिमी, आईएसआईएस और अलकायदा जैसे आतंकी संगठन छिपकर कर रहे हैं वही काम यह संगठन खुलेआम कर रहा है। इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष अरशद मदनी ने 2007 में संगठन की लीगल सेल का गठन किया जिसका उद्देश्य ये बताते हैं गरीब मुसलमानों की मदद करना लेकिन वास्तव में इनका काम है इस्लामिक आतंकवादियों, कट्टरता फैलाने वाले, उपद्रव करने वाले, और हिंसक प्रदर्शनकारियों को कानूनी सहायता देना। **जमीयत उलेमा ए हिंद** आतंकवादियों के केस लड़ता है, दंगा भड़काने वाले कट्टर उग्रवादियों को आर्थिक और कानूनी मदद देता है, इस्लामिक कट्टरता को बढ़ावा देने वाले और जिहादी मानसिकता का प्रचार-प्रसार करने वाले सभी समूहों को हर प्रकार से मदद करता है। अब इसके काले कारनामे लगातार सामने आ रहे हैं। ऐसे अनेक मामले हैं जिनमें बम ब्लास्ट, दंगे, हत्या, धार्मिक कट्टरता के चलते उपद्रव, और इंडियन मुजाहिदीन और इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी संगठन के लिए भर्ती करने वाले आरोपियों को आर्थिक और कानूनी सहायता पहुँचाने के लिए जमीयत उलेमा ए हिंद आगे आता रहा है। यह लीगल सेल आतंकी गतिविधियों से संबंधित सैंकड़ों केसों में आरोपियों को सहायता पहुँचा चुका है। देश के किसी भी कोने में जब मुस्लिम कट्टरपंथी दंगे करते हैं और उनके खिलाफ केस दर्ज होता है तो वहाँ जमीयत का सपोर्ट सिस्टम पहुँच जाता है और दंगाइयों के परिवार को सहायता देना, उनके केस लड़ना, जमानत दिलाना और उनके लिए मुसलमानों को एकजुट करने काम जमीयत करती है। यही सहायता **लव-जिहादियों** को भी दी जाती है, इनकी वेबसाइट के अनुसार ये अब तक 1000 से ज्यादा ऐसे प्रकरणों में सहायता कर चुके हैं। 7/11 मुंबई ट्रेन ब्लास्ट, 2006 मालेगाँव ब्लास्ट, औरंगाबाद आर्म केस, 26/11 आतंकी हमला, गेटवे ऑफ इंडिया ब्लास्ट की साजिश, जर्मन बेकरी ब्लास्ट, संकटमोचन मंदिर सीरियल ब्लास्ट, यह सूची बहुत लंबी है। ये वे केस हैं जिनमे आरोपियों को आर्थिक और कानूनी मदद देकर **जमीयत उलेमा ए हिंद** ने अपनी ओर से आतंकियों को निरपराध सिद्ध करने के लिए हर तरह से प्रयास किए। ऐसे कुछ मामलों पर चर्चा करना यहाँ जरूरी है। 26 जुलाई 2008 को अहमदाबाद में हुए सीरियल ब्लास्ट में 56 लोगों की जान गई थी और लगभग 200 लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। जांच में सामने आया कि ब्लास्ट करने वाले आतंकी इंडियन मुजाहिदीन और सिमी से जुड़े हुए थे, 8 फरवरी 2022 को गुजरात की स्पेशल कोर्ट ने 49 लोगों को दोषी माना। सुनवाई के दौरान इन आतंकियों की आर्थिक और कानूनी मदद **जमीयत उलेमा ए हिंद** ने की थी।

इसी दिन **जमीयत उलेमा ए हिंद** के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी का चौंकाने वाला बयान आया, उसने कहा कि हम निर्णय से असंतुष्ट हैं और आरोपियों को बचाने के लिए हाईकोर्ट जाएँगे। इस बयान से फिर स्पष्ट हो गया कि यह संगठन आतंकियों का पनाहगार है और इंडियन मुजाहिदीन और सिमी के ग्राउंड लेवल सपोर्ट सिस्टम की तरह काम कर रहा है। 2015 में इस संगठन ने विभिन्न केसों में 450 आरोपियों को कानूनी सहायता दी जिसमें से 52 आतंकवादी गतिविधियों के आरोप में गिरफ्तार आरोपी थे। 2015 में ही मुंबई के मलाड में आईएसआईएस के दो सदस्य **रिजवान अहमद और मोहसिन सैयद** को एटीएस ने गिरफ्तार किया, ये आईएसआईएस की आतंकी गतिविधियों के लिए युवाओं की भर्ती का काम कर रहे थे। इनके विरुद्ध एनआईए कोर्ट में केस चल

रहा था और तब यह संगठन इन दोनों आतंकियों को कानूनी सहायता दे रहा था। 6 साल तक यह केस चलता रहा और अंततः दिसंबर 2021 में आरोपियों ने एनआईए कोर्ट के सामने अपराध स्वीकार लिया और कहा कि वे पैसों के लालच में आकर आतंकी संगठन में युवाओं की भर्ती का काम रहे थे। इस केस में इन आतंकियों की ओर से **जमीयत उलेमा ए हिंद** के वकील वहाब खान केस लड़ रहे थे, जैसे ही आतंकियों ने अपराध स्वीकार किया तब इन्होंने कहा कि **अब हम इन दोनों लोगों का समर्थन नहीं करेंगे।** इसका सीधा सा अर्थ है यह संगठन इन दो आतंकियों की ओर से नहीं बल्कि एक तरह से आईएसआईएस की ओर से केस लड़ रहा था। वही आईएसआईएस जिसने भारत में अनेक आतंकी हमले कर मासूमों के खून की नदियाँ बहाई हैं। 7 मार्च 2006 को उत्तरप्रदेश के वाराणसी में संकटमोचन मंदिर और छावनी रेलवे स्टेशन पर हुए विस्फोटों में 20 लोगों की मौत हो गई थी। इस घटना के अगले महीने वाराणसी पुलिस ने मामले के सिलसिले में मुफ्ती वलीउल्लाह को गिरफ्तार कर लिया था। उस पर वाराणसी में सिलसिलेवार धमाकों की साजिश रचने का आरोप था। वलीउल्लाह को दस साल से मुस्लिम जमीयत उलेमा-ए-हिंद कानूनी मदद मुहैया करा रहा था। जून 2022 में जब गाजियाबाद अदालत ने उसे हत्या, हत्या के प्रयास और अंग-भंग की धाराओं और विस्फोटक अधिनियम के तहत दर्ज दो मामलों में दोषी ठहराया तब **जमीयत उलेमा-ए-हिंद** के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मदनी ने वाराणसी बम धमाकों के दोषी को मिली मौत की सजा पर कहा कि **हम इसे हाईकोर्ट में चुनौती देंगे** यह बयान सबके लिए चौंकाने वाला था कि एक संगठन खुलेआम आतंकियों के हाथ में हाथ रखकर न्याय व्यवस्था को चुनौती दे रहा है और उसके विरुद्ध कहीं कोई कार्यवाही नहीं हो रही।

इसी तरह इस संगठन ने 2013 में जर्मन बेकरी ब्लास्ट के दोषी इंडियन मुजाहिद्दीन के आतंकी मिर्जा हिमायत बेग को कानूनी सहायता दी। जून 2021 में अल कायदा के आतंकवादियों का केस लड़ने के लिए यूपी की कोर्ट में वकील नियुक्त किए। ऐसे अनगिनत मामले हैं जिनमे ब्लास्ट तो आईएसआईएस, इंडियन मुजाहिद्दीन, अल कायदा आदि ने करवाया लेकिन ब्लास्ट के बाद का सारा काम जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने किया। फिर चाहे आतंकियों को फंडिंग करना हो,अपने पैसों से वकील उपलब्ध कराना हो, उनके प्रति धार्मिक सहानुभूति पैदा करने के लिए कैंपेन चलाना हो या सरकारों पर दबाब डालने के लिए दंगे करवाना हो यह संगठन सारे कामों में सक्रिय रहता है। कुछ और उदाहरणों को देखने से इसकी कार्य पद्धति भी स्पष्ट हो जाती है जैसे कर्नाटक हिजाब मामले में साम्प्रदायिक तनाव के वातावरण बनाने की कोशिश करते हुए सांप्रदायिक नारे लगाने वाली लड़की को 5 लाख रुपए देने की घोषणा मौलाना अरशद मदनी ने की थी। नागरिकता कानून के विरोध में जहाँ-जहाँ हिंसक प्रदर्शन हुए वहाँ हिंसा करने वाले उपद्रवियों को कानूनी सहायता दी। ज्ञानवापी मामले में उग्रवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने से लेकर उपद्रवियों को प्रोत्साहन की खुलेआम घोषणा तक, जहाँ-जहाँ भारत के और सनातन धर्म के विरुद्ध षड्यंत्र है वहाँ किसी न किसी रूप में ऐसे कट्टरतावादी इस्लामिक संगठन सक्रिय हैं। पैगंबर मोहम्मद पर टिप्पणी के मामले में भड़की हिंसा के दौरान प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पथराव किया, आगजनी व वाहनों में तोड़फोड़ की, कई जगह हत्याएं हुई, जब इस मामले में पुलिस ने उपद्रवियों को गिरफ्तार किया तो प्रदर्शनकारियों को इसी संगठन ने कानूनी सहायता देने की घोषणा की। जून 2022 के अखबार ऐसी उग्रता को प्रोत्साहन देने वाली घोषणाओं की खबर से भरे पड़े हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है राँची का जहां जिन हिंसक लोगों ने पुलिस पर हमला किया उनके समर्थन में **जमीयत उलेमा-ए-हिंद** खड़ा हुआ और घोषणा की कि संगठन का प्रतिनिधि मंडल तमाम जगहों का दौरा करेगा जिनके माध्यम से उपद्रवियों को न्याय मिले, इसके प्रयास किए जाएँगे। इसकी कुत्सित मानसिकता का एक और उदाहरण देखिए, जुलाई 2022 में गुजरात सरकार ने स्कूलों में बच्चों को भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति से परिचित कराने और नैतिक मूल्यों के विकास के लिए गीता पढ़ाने का निर्णय लिया था। इस निर्णय के तत्काल बाद **जमीयत उलेमा-ए-हिंद** ने बयान जारी कर कहा कि वे स्कूलों में गीता पढ़ाने का विरोध करेंगे, इतना ही नहीं वे इस फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट तक गए। ऐसे संगठन हिंदू धर्म और संस्कृति को समाप्त करके इस्लामिक राष्ट्र बनाने के ध्येय से ही काम कर रहे हैं। इस संगठन की शाखाएं देश भर में काम कर रही हैं, जहां भी स्थानीय स्तर पर कोई घटना होती है, दोषियों को बचाने के लिए इसके उच्च पदाधिकारी तत्काल वकील भेज देते हैं और हर तरह से कट्टरपंथियों की सहायता करते हैं। जिस तरह पीएफआई पर प्रतिबंध लगाया गया ठीक उसी तरह **जमीयत उलेमा-ए-हिंद** पर भी शीघ्र ही प्रतिबंध लगना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा माइनोरिटी वेलफेयर के नाम पर आतंकवाद , जिहाद, कट्टरता और राष्ट्रविरोधी तत्वों का पालन-पोषण करने वाले ऐसे संगठन विषाणु की तरह संक्रमण फैलाएंगे। हमें इनके फंडिंग के स्रोत को भी समझने की जरूरत है और हलाल सर्टिफिकेट जैसे विषयों पर भी सामाजिक जागरूकता प्रसारित कर इनकी जड़ों को खत्म करना चाहिए। **जमीयत उलेमा ए हिन्द** भारत को इस्लामिक स्टेट बनाने के षडयन्त्रो में लगे लोगों का मजबूत नेटवर्क है, समय रहते इसे जड़ो से उखाड़ फेंकना अनिवार्य हो गया है ताकि देश की अस्मिता से खिलवाड़ करने वालों कोई सहारा नसीब न हो।

राखी की डोर और रिश्तों का भार

गांव के कोने में बसी एक पुरानी सी लेकिन आत्मीयता से भरी बस्ती थी – नाम था पिपलिया। वहीं रहती थी गुड़िया, चौथी कक्षा में पढ़ने वाली एक चंचल और होशियार लड़की। माँ खेतों में काम करती थी और पिता रोजगार की तलाश में शहर गए हुए थे। गुड़िया का एक छोटा भाई था–राजू, जिसे वह अपनी जान से भी ज्यादा चाहती थी। रक्षाबंधन का दिन करीब आ रहा था। गांव की गलियों में मिठाइयों की खुशबू, बच्चों की किलकारियां और रंग-बिरंगी राखियों की दुकानों ने त्यौहार का माहौल बना दिया था। लेकिन गुड़िया जानती थी कि इस बार वह अपने भाई को राखी नहीं बाँध पाएगी–राजू पिछले महीने तेज बुखार में चल बसा था।

राखी के दिन, जब सारी सहेलियाँ अपने भाइयों के साथ मिठाई खा रही थीं, गुड़िया चुपचाप अपने आंगन में बैठी मिट्टी से बनी एक छोटी सी कठपुतली के हाथ में राखी बाँध रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे, पर मुस्कान भी थी। **ये राखी तो सिर्फ धागा नहीं है, ये वादा है - जो अब भी निभाना है,** वह बुदबुदाई।

उसी समय गाँव की प्रधान महिला सरला देवी, जो विधवा औरतों और अनाथ बच्चों के लिए कार्य करती थीं, वहाँ आईं। उन्होंने देखा कि गुड़िया कैसे अपने दुःख को रचनात्मकता में बदल रही है। उन्होंने गुड़िया से पूछा,

बेटा, तुम ये किसे राखी बाँध रही हो?

गुड़िया ने जवाब दिया, मेरा भाई तो चला गया, पर मैं अब हर उस बच्चे की बहन बनूँगी जिसके पास और कोई नहीं है। यही मेरी राखी की सौगंध है।

सरला देवी उस बच्ची की बात सुनकर भावविभोर हो गईं। उन्होंने उसी दिन **'सहारा-संगठन'** की शुरुआत की जिसमें गांव की बहनें उन बच्चों को राखी बाँधने लगीं जो अनाथ या अकेले थे। गुड़िया की पहल ने एक नई परंपरा की नींव रखी–रिश्तों का वह स्वरूप जिसमें खून का नहीं, भावना का रिश्ता होता है। यह कहानी सिर्फ एक बालिका की पीड़ा नहीं, बल्कि उस संवेदना की अभिव्यक्ति है जिसमें समाज के कमजोर वर्ग को अपनाने की क्षमता होती है। रक्षाबंधन को केवल भाई-बहन के पारंपरिक पर्व की तरह देखने के बजाय, इसे एक सामाजिक बंधन का प्रतीक बनाना चाहिए। जहाँ आज भी बहुत-से बच्चे अनाथालयों में रक्षाबंधन की आस लिए बैठते हैं, वहीं यह कहानी हमें प्रेरित करती है कि हम हर उस बच्चे के जीवन में भाई-बहन का स्नेह भर सकें जिनके पास और कोई नहीं है। रक्षाबंधन सिर्फ एक रेशमी धागा नहीं, बल्कि समाज की उन दरारों को जोड़ने का अवसर है जहाँ अपनापन खो गया है। गुड़िया जैसी बच्चियाँ आज की दुनिया को यही सिखा रही हैं कि **राखी का रिश्ता खून से नहीं, बल्कि करुणा से बंधा होता है।**

सावन आयो रे

सावन आयो रे आयो रे सावन आयो रे
सावन आयो रे आयो रे सावन आयो रे

रंग-बिरंगे छाते देखो घर से बाहर निकले हैं
नीले-पीले, लाल-गुलाबी फूल भी कैसे महके हैं

कागज की कश्ती में हम तो खुशियाँ अपनी ढूंढे हैं
भूल के सारी दुनियादारी बस बारिश में झूमे हैं
सावन आयो रे आयो रे......

घूमड़-घूमड़ कर बादल आयो, संग पानी भी लायो है
घिरी बदरिया चारों ओर घनघोर अंधेरो छायो है

बरखा की बूंदों से देखो फूल भी कैसे महके हैं
पेड़ों की डालों पर देखो पंछी कैसे चहके हैं
सावन आयो रे आयो रे.......

रिमझिम-रिमझिम बरसा पानी सबने मौज मनाई है
गली, मोहल्ले खेत-खले में हरियाली सी छाई है

कल-कल बहतो पानी खेत में फसलें भी लहराई है
मेघराज ने खुश होकर चातक की प्यास बुझाई है

सावन आयो रे आयो रे सावन आयो रे
सावन आयो रे आयो रे सावन आयो रे

वाणी अमित जोशी, इंदौर

इतिहासपुरुषों ने भारत को फिर से अखंड करने को अनिवार्य बताया

शब्द "अखंड भारत राष्ट्रीयता के सभी मूल्यों को समाहित करता है" और एक अभिन्न संस्कृति

- पीटी, दीनदयाल उपाध्याय

हम अधिग्रहित स्वतन्त्रता को मजबूत करें और अखण्ड भारत बनाने का संकल्प लें

- वीर सावरकर

मैं स्पष्ट रूप से कल्पना कर सकता हूँ कि भारत माता पुनर्मिलन के बाद विश्वगुरू के आसन पर फिर से विराजमान होंगी

- अरविंदो घोष

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है
यह त्यौहार स्नेह भाव,
कर्त्तव्य एवं हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है।

सितम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 02 तेजा दशमी
ता. 05 शिक्षक दि. डॉ. राधाकृष्णन ज.
ता. 06 अनंत चतुर्दशी, गणेश विसर्जन
ता. 08 विश्व साक्षरता दिवस
ता. 14 राष्ट्रीय हिन्दी दिवस
ता. 25 पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी फोन नं. 0731-3551341